स्लॉथ भालू

पर्यावास

सूखे पतझड़ वन, भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है

आहार

दीमक, चींटियां और दूसरे कीड़े; मीठे फल, फूल, शहद के छत्ते; कंद और मूल

सर्वभक्षी और अवसरवादी अपमार्जक

व्यवहार

आम तौर पर अकेला रहता है, रातभर खाना ढूंढता है लेकिन सुबह अपने आराम करने की जगह पर लौट आता है। आराम करने के लिए पथरीले या घनेदार क्षेत्र पसंद करता है

भालुओं में देखने और सुनने की शक्ति कम होती है। इसलिए, बहुत पास जाने पर ही वे हमारी उपस्थिति का पता लगा सकते हैं

प्रजनन

मादा अधिकतर सर्दियों में जन्म देती है – दिसंबर के अंत से जनवरी की शुरूआत तक प्रजनन का मौसम स्थान के अनुसार बदलता रहता हैं

आईयूसीएन (IUCN) स्थिति

असुरक्षित

आबादी

<10,000 to >20,000

प्रजनन आयु

3.5 – 6 साल

गर्भकाल

6-7 महीने

मादा हर तीसरे साल शावकों को जन्म देती है

एक बार में 1–2 शावक

माँ शावकों को पीठ पर लेकर चलती है

शावक अपनी माँ के साथ 1–2 साल रहते हैं

औसत जीवनकाल

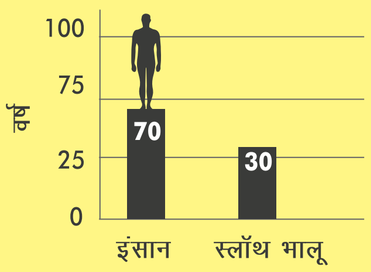

अधिकतम वज़न

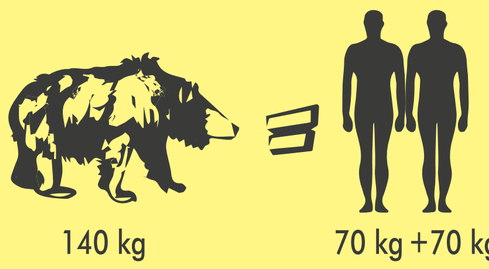

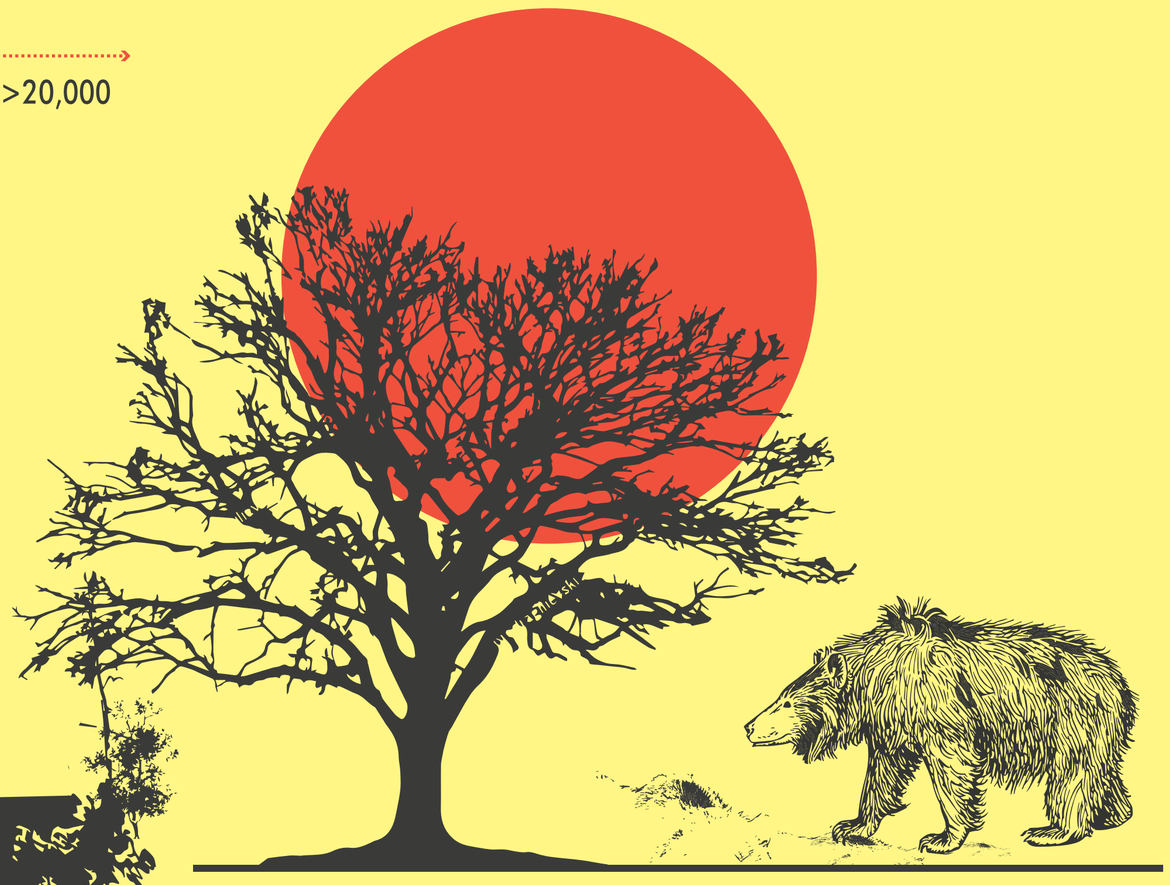

- यह निशाचर होता है जो देर शाम से लेकर भोर तक सक्रिय रहता है
- इसके काले बाल धूल से भरे होते हैं और इसकी छाती पर अंग्रेज़ी अक्षर टी या एल जैसा चिन्ह बना होता है
- शोर मचाता है; खाना ढूंढते या खोदते समय किकियाने और घरघराने की आवाज़ निकालता है
- कीड़ों के घोंसलों और मधुमक्खी के छत्तों पर आक्रमण करते समय यह अपने नथुने बंद कर लेता है जिससे धूल और कीड़े दूर रहते हैं
- पेड़ों पर चढ़कर मधुमक्खी के छत्तों को गिराकर उन्हें खाता है
- मादा गुफ़ाओं में या खुद बिल खोदकर शावकों को जन्म देती है
- शावकों का बचाव करने के लिए मादा इंसानों पर आक्रमण कर सकती है
- ख़तरा महसूस करने पर अपने दोनों टांगों पर खड़े होकर अपना आकार बड़ा बना लेता है और हथियार के तौर पर अपने पंजे दिखाता है
- सूंघने में माहिर लेकिन आँखें कमज़ोर हैं
- अपने आपको इंसानी पर्यावास के अनुकूल बनाने में सक्षम; कचरे से आकर्षित होता है

क्या आप जानते है?

- स्लॉथ भालू बीजों को यहां से वहां फ़ैलाकार और दीमकों की आबादी को नियंत्रित कर पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित रखते हैं
- 400 साल से अधिक समय से सर्कस और नृत्य प्रदर्शन के लिए इनका शोषण होता रहा है
- कृषि, खनन, अतिक्रमण, रास्ते या हाईवे जैसी संरचनाओं और पशुओं के चरने से इनके पर्यावास का विखंडन और विनाश हुआ है
- गर्मियों में पानी की कमी भालूओं को इंसानी पर्यावासों की ओर धकेल देती है
- इंसानों द्वारा अति–संग्रहण से फ़ल, शहद के छत्ते और महुआ जैसे गैर लकड़ी वन उत्पादों की उपलब्धता में कमी आई है जिस कारण खाने के लिए स्लॉथ भालू इंसानी पर्यावास में घुस आते हैं जिससे संघर्ष होते हैं
- ये खाने की तलाश में मीलों चल सकते हैं और अक्सर गाँव में पड़े कचरे के ढेर से खाना चुन कर खाते हैं
- गाँव में रहने वालों पर भालू द्वारा आक्रमण की घटनाएं तब अधिक बढ़ जाती हैं जब महुआ फूल और शहद इकट्ठा करने के लिए गाँव वाले जंगल में जाते हैं क्योंकि स्लॉथ भालू भी उन्हीं फूलों की ओर आकर्षित होते हैं
- पारंपरिक फ़सलों को छोड़कर अधिक मुनाफ़ा देने वाले फ़सलों की खेती ने इंसानों और भालुओं के बीच संघर्ष को बढ़ा दिया है क्योंकि भालू ऊर्जा से भरपूर फ़सल की ओर ज़्यादा आकर्षित होते हैं
- गर्मियों में, महुआ फूलों के संग्रहण के समय, सर्दियों में, आग के लिए लकड़ी संग्रहण के समय और बारिश के मौसम में कुकुरमुत्ता संग्रहण के समय संघर्ष होते हैं

भारत में मनुष्य – वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20 भारत 2023 INDIA